FPO(फार्मर प्रोड्यूसर ऑर्गनाइजेशन)

S.No.	Index
1.	सफलता की कहानियाँ और केस स्टडीज
2.	FPO गठन के ज़रिए जैविक खेती को बढ़ावा
3.	बेहतरीन खुशबू वाला जीरा शंकर चावल
4.	FPO OTLO ने 4,000 किसानों और महिलाओं को मिलेट्स में रोजगार दिया
5.	जगन्नाथ तिलगाम :FPO गठन से आदिवासी किसानों को जैविक खेती की प्रेरणा

सफलता की कहानियाँ और केस स्टडीज

किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) की सफलता की कहानियाँ भारतीय कृषि क्षेत्र में आशा की नई किरणें लेकर आई हैं। इनमें से एक प्रमुख उदाहरण महाराष्ट्र के नांदेड़ जिले का है, जहाँ किसानों ने मिलकर "सविता FPO" की स्थापना की। इस FPO ने अपने क्षेत्र के किसानों को एकजुट किया और कृषि उत्पादों की मार्केटिंग में उन्हें सशक्त बनाया। शुरुआत में, उनके सामने कई चुनौतियाँ थीं, जैसे उत्पादन की कम कीमतें और विपणन की कठिनाइयाँ। लेकिन, प्रशिक्षण और उचित मार्गदर्शन के साथ, उन्होंने सामूहिक रूप से एक ठोस विपणन नेटवर्क स्थापित किया। आज, सविता FPO ने अपने सदस्यों की आय में 30% तक की वृद्धि की है और क्षेत्रीय बाजारों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है।

उसी तरह, उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी जिले का "किसान प्रगति FPO" एक और प्रेरणादायक केस स्टडी है। इस FPO ने अपने सदस्यों को उन्नत कृषि तकनीकों और बेहतर बीजों के उपयोग के बारे में प्रशिक्षण दिया। इसके परिणामस्वरूप, किसानों की उपज में उल्लेखनीय वृद्धि हुई और उत्पादों की गुणवत्ता में भी सुधार

हुआ। किसान प्रगति FPO ने न केवल अपनी उपज को बेहतर बनाया, बल्कि निर्यात की दिशा में भी कदम बढ़ाए। उन्होंने अपने उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भी पहुँचाने की दिशा में कार्य शुरू किया, जिससे अतिरिक्त लाभ हुआ।

इन सफलता की कहानियों से स्पष्ट होता है कि जब किसान एकजुट होते हैं और सही मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं, तो वे न केवल अपनी आय बढ़ा सकते हैं, बल्कि कृषि क्षेत्र में नए मानक भी स्थापित कर सकते हैं। ये उदाहरण यह दिखाते हैं कि FPOs के माध्यम से किसान अपने संसाधनों का अधिकतम उपयोग कर सकते हैं और संगठित तरीके से बाजार में प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं। इनके माध्यम से मिले प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता ने कृषि को एक नई दिशा दी है और किसानों को आत्मनिर्भर बनने में मदद की है।

इन केस स्टडीज से यह भी सीखने को मिलता है कि FPOs की सफलता के लिए केवल आर्थिक लाभ ही नहीं, बल्कि सामुदायिक सहयोग और प्रबंधन की कुशलता भी आवश्यक है। संगठनात्मक ढाँचा, नेतृत्व की गुणवत्ता और सदस्यता की सक्रिय भागीदारी, ये सभी कारक सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन सफलता की कहानियों से प्रेरित होकर, अन्य क्षेत्रों के किसान भी इस मॉडल को अपनाकर अपने कृषि व्यवसाय को नई ऊँचाइयों पर ले जा सकते हैं।

जगन्नाथ तिलगाम: FPO गठन से आदिवासी किसानों को जैविक खेती की प्रेरणा

FPO गठन के ज़रिए जैविक खेती को बढ़ावा

छत्तीसगढ़ के कबीरधाम ज़िले के रहने वाले किसान जगन्नाथ तिलगाम ने बताया कि उन्होंने कबीरधाम ऑर्गेनिक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड नाम से एक FPO गठन किया है। हाल ही में दिल्ली में लगे एग्री एक्सपो में वो जीरा शंकर राइस, ब्लैक राइस, रागी, कोदो, कुटकी वगैरह उत्पाद लेकर पहुंचे थे, जो जैविक तरीके से उगाए

गए थे। जगन्नाथ FPO के डायरेक्टर हैं। उनका कहना है कि नाबार्ड का जहां भी स्टॉल लगता है वो वहां जाकर अपने FPO के ज़रिए उत्पाद बेचते हैं।

बेहतरीन खुशबू वाला जीरा शंकर चावल

छत्तीसगढ़ का जीरा शंकर राइस पूरी दुनिया में अपनी बेहतरीन खुशबू और स्वाद के लिए मशहूर है। जगन्नाथ बताते हैं कि इलाके में इस चावल का बहुत महत्व है और पुराने ज़माने से ही लोग इसे बहुत मज़े के साथ खाते आ रहे हैं। इस चावल के दाने ज़ीरे की तरह बहुत छोटे-छोटे होते हैं और पकने पर मुलायम, चमकदार और बहुत स्वादिष्ट लगते हैं।

इसकी ख़ास बात ये है कि इसे पकने में 10 मिनट से भी कम का समय लगता है और ठंडा होने के बाद भी ये चावल मुलायम बना रहता है। इस चावल की सबसे अधिक खेती छत्तीसगढ़ के सिवनी ज़िले में की जाती है और ये चावल ज़िले की पहचान बन गया है। इस चावल की करीब 12000 हेक्टेयर क्षेत्र में जीराशंकर धान लगाई जाती है।

ब्लैक राइस की ख़ासियत

छत्तीसगढ़ के करीबधाम ज़िले के आदिवासी किसान मिलेट्स के साथ ही जिस ब्लैक राइस की खेती कर रहे हैं, वो सेहत के लिए बहुत फ़ायदेमंद माना जाता है और इसकी कीमत भी सामान्य चावल से कई गुना ज़्यादा है। जानकारों का कहना है कि ब्लैक राइस में दूसरे चावलों की तुलना में सबसे ज़्यादा रोग प्रतिरोधक क्षमता पाई जाती है।

इसके साथ ही इसमें कोलेस्ट्रॉल बिल्कुल नहीं होता है, जबकि फाइबर और प्रोटीन भरपूर मात्रा में पाया जाता है। ये हार्ट अटैक और स्ट्रोक की संभावना को भी कम करता है। इसके अलावा, दिल की सेहत का ख्याल रखता है, वज़न कम करने में

मददगार है। इतने फ़ायदे होने की वजह से ही इसकी मांग बढ़ रही है जिससे किसान भी इसकी खेती के लिए प्रेरित हुए हैं।

बिक्री का काम FPO के ज़रिए

जगन्नाथ तिलगाम अपने इलाके के आदिवासी किसानों को जैविक खेती के लिए प्रेरित करके उनके जीवन स्तर में सुधार की कोशिश कर रहे हैं। साथ ही FPO के माध्यम से उनकी बाज़ार की दिक्कत को भी दूर कर रहे हैं, क्योंकि अब किसानों के गुणवत्तापूर्ण अनाज को बेचने की समस्या नहीं होगी, बिक्री का काम FPO के ज़रिए आसानी से हो जाएगा। पौष्टिक अनाज की जैविक खेती से किसानों को अच्छी आमदनी होगी और आम लोगों को अच्छी सेहत का तोहफ़ा मिलेगा।

जगन्नाथ तिलगाम का कहना है कि अलग-अलग जगह लगने वाले स्टॉल्स में जाकर उन्हें फ़ायदा ही होता है, क्योंकि वहां एक-दूसरे से मिलकर अपने उत्पाद के बारे में बात कर सकते हैं, मार्केटिंग प्लान बना सकते हैं, जो उत्पाद उनके पास नहीं है वो दूसरों से ले सकते हैं।

जगन्नाथ आगे कहते हैं कि आजकल जिस केमिकल युक्त खेती की वजह से जिस तरह से पर्यावरण प्रदूषण बढ़ रहा है और कैंसर जैसी घातक बीमारी का प्रकोप बढ़ रहा है, उसे देखते हुए पौष्टिक अनाजों की जैविक खेती समय की मांग बन गई है और अब हर किसान को कोशिश करनी चाहिए कि वो सिर्फ ऑर्गेनिक तरीके से ही खेती करें।

FPO OTLO ने 4,000 किसानों और महिलाओं को मिलेट्स में रोजगार दिया

मिलेट्स यानि मोटे अनाज को कच्चे रूप में अपने भोजन में शामिल करना शहरी आबादी के लिए मुश्किल है, इसलिए बहुत से FPO और कंपनियां मिलेट्स व्यवसाय (Millets Business) में उतरी हैं। प्रोसेसिंग कर मिलेट्स से ढेर सारी हेल्दी चीज़ें बना रही हैं, ऐसा ही एक FPO गुजरात के डांग जिले में काम कर रहा है। FPO (Farmer Producer Organization) का मकसद होता है किसानों को सही कीमत पर बीज-खाद और ज़रूरी चीज़ें मिले, साथ ही उनकी बाज़ार की समस्या भी खत्म हो जाए। क्योंकि जब तक किसानों की फसल बाज़ार में सही समय पर नहीं पहुंचेगी उन्हें इसकी सही कीमत नहीं मिलेगी।

कैसे हुई OTLO FPO की शुरुआत?

कहते हैं नाम में क्या रखा है, मगर हर नाम के पीछे भी कुछ कहानी, कुछ विचार होते हैं। OTLO FPO के नामकरण के बारे में बताते हुए विनीत कुमार कहते हैं,

गुजराती में ओटलो का मतलब होता है चबूतरा, जहां कुछ लोग मिलकर किसी मुद्दे पर चर्चा करते हैं। वो भी किसानों के साथ इसी तरह चबूतरे पर बैठकर उनकी समस्याएं सुनते थे और उसका समाधान निकालने की कोशिश करते थे और बस यहीं से OTLO की शुरुआत हो गई। FPO के ज़रिए किसानों को गुणवत्तापूर्ण खाद, बीज उपलब्ध कराने के साथ ही मिलेट्स व्यवसाय में उनकी बाज़ार की समस्या को भी दूर करने की कोशिश की जा रही है।

4 हज़ार किसान जुड़े और मिलेट्स प्रोसेसिंग शुरू की

विनीत कुमार बताते हैं कि गुजरात के डांग जिले में 99 प्रतिशत आबादी आदिवासी लोगों की है। ये लोग बड़े पैमाने पर मिलेट्स की खेती करते हैं और थोड़ा पहाड़ी इलाका होने की वजह से अच्छी गुणवत्ता वाले मिलेट्स की उपज होती है। वो बताते हैं कि 5-6 साल पहले तक फसल सिर्फ़ बाहर भेजी जाती थी, लेकिन उनके FPO ने सोचा कि जब इतनी ज़्यादा उपज होती है तो क्यों न इसकी प्रोसेसिंग करके अलग-अलग उत्पाद तैयार किए जाए जिससे किसानों को भी फायदा हो। विनीत कहते हैं कि शुरुआत में उनके साथ 350 किसान जुड़े, जो संख्या अब बढ़कर 4000 तक पहुंच चुकी है।

प्रोसेसिंग यूनिट में 90 फ़ीसदी महिलाएं

कृषि के क्षेत्र में बहुत सी महिलाएं हैं, मगर उन्हें किसान का दर्जा नहीं दिया जाता। विनीत कुमार भी कहते हैं कि उनके FPO से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से जो 4000 किसान जुड़े हैं, उनमें एक बड़ी संख्या महिलाओं की भी है। आगे वो बताते हैं कि खेती से जुड़ी गतिविधियों के साथ ही उनके FPO की प्रोसेसिंग यूनिट में करीब 90 फ़ीसदी महिलाएं हैं यानि कहा जा सकता है कि OTLO को चलाने वाली महिलाएं ही हैं। आपको बता दें कि संयुक्त राष्ट्र ने 2026 को अंतरराष्ट्रीय महिला

किसान वर्ष घोषित किया है यानि आने वाले सालों में कृषि के क्षेत्र में महिलाओं के योगदान पर चर्चा की जाएगी।

मिलेट्स से कौन से उत्पाद तैयार?

मिलेट्स से अलग-अलग तरह के उत्पाद बनाने के बारे में विनीत बताते हैं कि जो किसान मिलेट्स की खेती कर रहे हैं, उनके घर में तो पता है कि इसे खाना कैसे है या इससे कौन-सी चीज़ कैसे बनाई जाती है, लेकिन शहरी लोगों को नहीं पता होता कि इसका इस्तेमाल कैसे किया जाए। मान लीजिए किसी शहरी महिला को रागी का आटा दे दिया जाए तो उन्हें ये पता ही नहीं चलेगा कि इसकी रोटी कैसे बनती है। इसलिए उनके FPO ने मिलेट्स को घर-घर तक पहुंचाने के लिए ऐसे उत्पाद बनाने शुरू किए जो शहर में आमतौर पर लोग खाना पसंद करते हैं जैसे नूडल्स, पास्ता, कुकीज़, नमकीन, बिस्कीट।

विनीत आगे कहते हैं कि चूंकि उनका FPO गुजरात में है, तो अलग-अलग तरह के खाखरा भी बनाते हैं जिसमें ज्वारा, बाजरा, रागी के कुल 8 तरह के फ्लेवर उपलब्ध हैं। उनका कहना है कि इसकी ख़ासियत है कि ये शुद्ध मिलेट्स से बना होता है, इसमें मैदा या आटा बिल्कुल भी नहीं मिलाया जाता है। खाखरा के साथ ही उनके पास कई तरह की कुकीज़ भी हैं। इसके अलावा वो अलग-अलग तरह की नमकीन भी बनाते हैं। इतना ही नहीं, वो हर क्षेत्र के स्वाद को ध्यान में रखते हुए ही मसालों का भी इस्तेमाल करते हैं जैसे महाराष्ट्र के लिए अलग मसाला, गुजराती फ्लेवर के लिए अलग मसाला, दक्षिण भारत और दिल्ली के लोगों के लिए अलग मसालों का इस्तेमाल होता है। विनीत कुमार के FPO ने बच्चों के लिए मिलेट्स के अलग-अलग फ्लेवर के पास्ता, नूडल्स के साथ ही मूसली और कॉर्न फ्लेक्स भी बनाए हैं। इसके अलावा वो अब इडली, डोसा के प्रीमिक्स बनाने पर भी काम कर रहे हैं। यानी अब शहरी लोगों के पास भी हेल्दी नाश्ते के ढेरो विकल्प हैं।

FPO खुलने से किसानों को फ़ायदा

उनके FPO से किसानों को होने वाले फ़ायदों के बारे में बात करते हुए विनीत कहते हैं कि किसानों को अब बीज खरीदने के लिए कहीं दूर नहीं जाना पड़ता, जिससे उनके परिवहन का खर्च बचता है और सस्ती कीमत पर अच्छी गुणवत्ता वाले बीज मिल जाते हैं। किसानों की फसल को OTLO खरीद लेता है तो उनकी बाज़ार की समस्या भी खत्म हो जाती है और उन्हें फ़ायदा होता है। वहीं यूनिट में काम कर रही महिलाओं को पहले काम की तलाश में अपने गांव-कस्बे से बाहर जाना पड़ता था, लेकिन अब उन्हें यहीं रोज़गार मिल गया है जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।

किसानों को प्रोसेसिंग और पैकेजिंग की ट्रेनिंग

विनीत कुमार बताते हैं कि उनके FPO के नैचुरल फ़ार्मिंग के सेंटर है, जहां उनके FPO से जुड़े किसान दूसरे किसानों को ट्रेनिंग देते हैं। इतना ही नहीं, उनके रहने की भी व्यवस्था की जाती है। विनीत कहते हैं कि उनका मकसद ज़्यादा से ज़्यादा FPO के साथ काम करने का है ताकि सबको फ़ायदा पहुंचे। वो उन्हें सिखाएंगे कि कच्चे माल को प्रोसेसिंग और पैकेजिंग कैसे किया जाए ताकि फसल की उचित कीमत मिल सके। कैसे अपने इलाके की खास चीज़ों की प्रोसेसिंग करके किसान आगे बढ़ सकते हैं। जैसे छत्तीसगढ़ के खुशबूदार चावल लोकप्रिय है तो वहीं पर प्रोसेसिंग करके उसकी पैकेजिंग की जाए ताकि फसल की अच्छी कीमत मिले और रोज़गार के अवसर बढ़ें।